ISSN 2321 - 5704

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

अंक 5 – वर्ष 5, मार्च 2018

राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर

भारत में महिला सशक्तिकरण

– *अनुपमा कौशिक*

अनुपमा कौशिक

एक सशक्त महिला वह है, जो अपने जीवन संबंधी निर्णय स्वयं ले सके तथा जिसमें आत्म मूल्य हो और जो अपने आस पास के माहौल को कुछ हद तक प्रभावित कर सकती हो।

आज के युग में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता महसूस होने का बुनियादी कारण है, कि हम एक पितृसत्तात्मक समाज में रह रहे हैं। पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष को महिला से श्रेष्ठ व उच्च माना जाता है तथा कठोर कार्य विभाजन होता है। जिसमें महिला का कार्य घरेलु अर्थात पति, बच्चों व घर की देखभाल करना माना जाता है तथा पुरुष का कार्यक्षेत्र बाहरी होता है, खासकर आजीविका अर्जित करने का। यह कार्य विभाजन महिला को पुरुष पर निर्भर बनाता है तथा कई बार महिला के शोषण व उस पर होने वाली हिंसा का कारण भी बनता है। महिला को ऐसी हिंसा से बचाने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। साथ ही यह समझना जरूरी है कि जिस देश व समाज की महिला सशक्त नही होगी, उस देश व समाज का विकास होना संभव नही है।

भारत के इतिहास को महिलाओं की दृष्टि से यदि देखें तो उसे पाँच कालों में विभाजित किया जा सकता है: वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल, मध्यमकाल, ब्रिटिश काल तथा स्वतंत्रता के पश्चात का काल।

वैदिक काल में भारतीय महिला सशक्त थी, उसे अपना वर चुनने की, शिक्षा प्राप्त करने की, व्यवसाय करने की स्वतंत्रता थी। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा का अभाव था तथा विधवा विवाह प्रचलन में था। महिला को संपत्ति प्राप्त करने का भी अधिकार था। इस काल में पति-पत्नि साथी थे।

उत्तर वैदिक काल में महिला की स्थिति में गिरावट आने लगी महिला की शुद्धता पर बल दिया जाने लगा तथा अंतर्जातीय विवाह पर प्रतिबंध लग गया। पति अब देवता हो गया तथा महिला को पिता, पति व पुत्र की अधीनता स्वीकारनी पड़ी। बहु पत्नी प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह तथा घरेलू हिंसा का प्रारंभ हुआ।

मध्यकाल में महिला की स्थिति में और गिरावट आई। कन्या शिशु हत्या, बहुपत्नी प्रथा, पर्दा, अशिक्षा, घरेलु हिंसा, जौहर, सती, देवदासी व हरम प्रचलित हो गये। विधवा विवाह प्रतिबंधित हो गया। महिला घर में कैद हो गई व पुरुष पर पूर्णरूपेण निर्भर हो गई। उसकी स्थिति स्पष्टतः पुरुष में निम्न थी।

अंक 5, मार्च 2018
डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय